पाठ - 10 **दिसम्बर 2-8**

प्रतिज्ञा की संतान

सब्त अपराह्न **दिसम्बर 2**

इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढ़ें : रोमियों 9

याद वचनः *"सो वह जिस पर चाहता है, उस पर दया करता है; और जिसे चाहता है,उसे कठोर कर देता है"* (रोमियों 9:18)।

जैसा यह लिखा है, मैंने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय जाना ... क्योंकि वह मूसा से कहता है, मैं जिस किसी पर दया ... उसी पर कृपा करूँगा" (रोमि० 9:13, 15)।

पौलुस यहाँ पर किस विषय में बातें कर रहा है? मनुष्य का स्वतंत्र विचार और चुनाव करने की आजादी के विषय में क्या है जिसके बिना बहुत कम जो हम विश्वास करते हैं क्या अर्थ होता है? क्या हम परमेश्वर को चुनने और इंकार करने के लिये स्वतंत्र नहीं हैं अथवा यह पद ये सिखा रहा है कि खास लोग बचाये जाने के लिये चुने गये हैं और दूसरे खोने के लिये उनके व्यक्तिगत चुनावों से बेखबर?

हमेशा की तरह, बड़े तस्वीर पर निगाह डालकर कि उसपर पौलुस क्या कह रहा है, जवाब मिल जाता है। पौलुस तर्क की एक पंक्ति का पीछा कर रहा है जिसमें वह परमेश्वर के अधिकार को दिखाने का प्रयास करता है उन्हें चुनने के लिये जिन्हें वह अपने "चुने" हुओं के तौर पर व्यवहार करेगा। आखिरकार, परमेश्वर वह है जो संसार को प्रचार करने की अंतिम जिम्मेदारी का वहन करता है। इसलिये, वह क्यों अपने एजेन्ट के तौर पर जिससे वह चाहता है चुन नहीं सकता? अभी तक जैसे परमेश्वर किसी को उद्धार के अवसर से वंचित नहीं करता, परमेश्वर के भाग में ऐसी कार्यवाही स्वतंत्र विचार के सिंद्धंतों पर विपरीतार्थ नहीं है। इससे महत्त्वपूर्ण, यह महान सत्य का विरोधाभास नहीं कि मसीह सभी मनुष्यों के लिये मरा और उसकी इच्छा थी कि सबको मुक्ति मिले।

जब तक हम याद करते हैं कि रोमियों 9 व्यक्तिगत मुक्ति की चर्चा नहीं करता जिनका यह नाम लेता है, परन्तु यह कि यह उनके एक निश्चित काम को करने की बुलाहट की चर्चा करता है, अध्याय किसी कठिनाईयों को पेश नहीं करता।

रविवार **दिसम्बर 3**

पौलुस का बोझ

"और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे । जो बातें तुझे इस्राएलियों से कहनी है वे ये ही हैं" निर्ग० 19:6

परमेश्वर को मूर्तिपूजा, अंधकार और विधर्मी जगत को प्रचार करने के लिये धर्म, प्रचारकों की जरूरत थी। उसने इस्राएलियों को चुना और उनपर स्वयं को प्रकट किया। उसने योजना बनायी कि वे एक आदर्श राष्ट्र बनेंगे और इस प्रकार दूसरों को सच्चे परमेश्वर की ओर आकर्षित करेंगे। यह परमेश्वर का उद्देश्य था कि इस्राएल के द्वारा अपने चरित्र के प्रकाशन के द्वारा संसार उस तक खींचा चला आए। बलिदान सेवा की शिक्षा के द्वारा मसीह राष्ट्रों के सामने उठाया जाना था, और जो उसे देखें वे जीवित होना चाहिए था। जैसा कि इस्राएलियों की संख्या बढ़ने लगी, जिस प्रकार उनकी आशीषों में बढ़ोतरी हुई, उन्हें अपनी सीमाओं को बढ़ाना था। जब तक उनका राज्य को संसार अंगीकार न कर ले।

पढ़ें : रोमियों 9:1-12, मानव असफलताओं के बीच परमेश्वर की विश्वसनीयता के विषय में पौलुस यहाँ पर क्या तर्क पेश कर रहा है? पौलुस तर्क की पंक्ति का निर्माण कर रहा है जिसमें वह दिखायेगा कि इस्राएलियों को की गई प्रतिज्ञा पूरी तरह

असफल नहीं हुई थी। अवशेष मौजूद है जिसके द्वारा परमेश्वर अभी भी काम करने का प्रयत्न करता है। अवशेष के विचार की वैद्धता को स्थापित करने के लिये, पौलुस इस्राएलियों के इतिहास में पुन: निगाह डालता है। वह दिखाता है कि परमेश्वर हमेशा चयनशील रहा है: (1) परमेश्वर अपनी वाचा होने के लिये अब्राहम की सभी संतान का चयन नहीं किया, केवल इसहाक की पंक्ति को चुना। (2) उसने इसहाक के वंशज के सभी को नहीं चुना केवल याकूब के वंशज को चुना।

यह देखना महत्त्वपूर्ण भी है कि विरासत या वंश उद्धार की गारन्टी नहीं देता। आप उचित खून से हो सकते हैं, सही परिवार से, और सही कलीसिया से, फिर भी खो गए हैं, अभी भी प्रतिज्ञा से बाहर हैं। यह विश्वास है, एक विश्वास जो प्यार से कार्य करता है, वह उन्हें प्रकट करता है जो "प्रतिज्ञा की संतान हैं" (रोमि० 9:8)।

रोमियों 9:6 में वाक्यांश को देखें: "इसलिये कि जो इस्राएल के वंश हैं, वे सब इस्राएली नहीं।" हमारे लिये यहाँ पर कौन-सा महत्त्वपूर्ण संदेश हम पाते हैं, एडवेंटिस्टों के तौर पर कौन हैं जो विभिन्न प्रकार से हमारे युग में वही भूमिकाएँ निभाते हैं जो कि प्राचीन इस्राएलियों ने अपने समय में किया?

सोमवार **दिसम्बर 4**

चुने हुए

"उसे कहा गया, बड़ा छोटे की सेवा करेगा। जैसा लिखा है, कि मैंने याकूब से प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय जाना" (रोमि० 9:12, 13)।

जैसा इस सप्ताह के प्रारंभ में कहा गया, रोमियों 9 को अच्छी रीति से समझना असंभव है जब तक एक न पहचाने कि पौलुस व्यक्तिगत उद्धार की बात नहीं कर रहा। वह खास भूमिकाओं के विषय यहाँ पर बातें कर रहा है कि परमेश्वर विशिष्ट लोगों को भूमिका हेतु बुला रहा था। परमेश्वर याकूब को लोगों के पूर्वज के तौर पर चाहता था जो संसार में उसके खास प्रचार एजेन्सी बनें। इस अनुच्छेद में किसी प्रकार की उलझन नहीं कि एसाव नहीं बचाया जायेगा। परमेश्वर उसे बचाये जाने की उतनी ही इच्छा करता था जितनी सब लोगों को बचाये जाने की चाह करता है।

पढ़ें : रोमियों 9:14,15 उस प्रसंग में जो हम पढ़ते आये हैं इन शब्दों को हम कैसे समझते हैं ?

पौलुस व्यक्तिगत उद्धार की बातें पुन: नहीं कर रहा है, क्योंकि परमेश्वर उस आयाम में सबों पर दया दिखाता है उसके लिये "सब मनुष्यों का उद्धार हो" (1 तीमु० 2:4)। "क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है" (तीतुस 2:11)। परन्तु परमेश्वर भूमिका निभाने के लिये राष्ट्रों को चुनता है, और यद्यपि इन भूमिकाओं को निभाने के लिये वे इन्कार कर सकते हैं, वे परमेश्वर के चुनाव को रोक नहीं सकते। कोई बात नहीं एसाव ने इसके लिये कितना कठिन प्रयास किया होगा, वह मसीहा या चुने हुए लोगों का पूर्वज नहीं हो सका।

अंत में, यह परमेश्वर के भाग में मनमाना चुनाव नहीं था, कोई ईश्वरीय आदेश नहीं, जिसके द्वारा एसाव को उद्धार से निकाल दिया गया था। मसीह के द्वारा उसके अनुग्रह के उपहार सभों के लिये मुफ्त है। हम सब कोई बचाये जाने के लिये चुने गये हैं, खोने के लिये नहीं (इफि० 1:4, 5; 2 पत० 1:10) यह हमारा स्वयं का चुनाव है, परमेश्वर का नहीं, जो हमें मसीह में अनंत जीवन की प्रतिज्ञा से अलग करता है। यीशु हरएक मानव जाति के लिये मरा। तथापि परमेश्वर ने अपने वचन में शर्तों को स्थिर कर दिया है जिस पर प्रत्येक आत्मा अनंत जीवन के लिये चुनी जायेगी मसीह में विश्वास, जो न्यायोचित पापी को आज्ञाकारिता की ओर अग्रसरित करता है।

मानो कि कोई अस्तित्व में नहीं है, आप स्वयं संसार की नींव से पूर्व मसीह में उद्धार के लिये चुने गये। यह आप की बुलाहट है, आपका चुनाव, सब यीशु में परमेश्वर के द्वारा आपको दिया गया है। क्या ही सुअवसर, क्या ही आशा महान सभी चीजें विचार की गई, इस महान प्रतिज्ञा की तुलना में क्यों नहीं सब कुछ फीका पड़ जाता है? क्यों पाप करना सभी दुखों में से बढ़कर है, अहम, और शरीर सब आप से ले ली जायेगी जो मसीह में आपको प्रतिज्ञा की गई है?

मंगलवार **दिसम्बर 5**

रहस्याएँ

"क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक-सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में आकाश और पृथ्वी का अंतर है" (यशा० 55:8, 9)।

पढ़ें : रोमियों 9:17-24, दिया गये है जो हम अब तक पढ़ते आये हैं पौलुस के तर्क को यहाँ पर हमें कैसे समझना है?

निर्गमन के समय मिस्र के साथ चर्चा के द्वारा जिस रीति से उसने किया परमेश्वर मानव जाति के उद्धार के लिये काम कर रहा था। मिस्र के प्लेग में परमेश्वर का स्वयं का प्रकाशन और अपने लोगों के बचाव में मिस्रियों पर प्रकट होने के लिये डिजाईन किया गया, साथ ही साथ दूसरे राष्ट्रों के लिये, कि इस्राएलियों का परमेश्वर वाकई में सच्चा परमेश्वर था। यह एक आमंत्रण के तौर पर राष्ट्रों के लोगों के लिये अपने देवताओं को छोड़ने और आने तथा उसे सेवा करने के लिये डिजाईन किया गया था।

स्पष्ट तौर पर फिरौन ने पहले ही परमेश्वर के विरुद्ध अपना चुनाव कर लिया था, फिर भी अपने हृदय को कठोर करने पर परमेश्वर उद्धार के अवसर से उसे अलग नहीं कर रहा था। कठोर होना इस्राएल को जाने देने की अपील के खिलाफ था, फिरौन के लिये व्यक्तिगत उद्धार को ग्रहण करने की परमेश्वर की अपील के खिलाफ नहीं। मसीह फिरौन के लिये मरा जैसा मूसा, हारून एवं इस्राएल की बाकी संतान के लिये मरा।

इन सब में निर्णायक बिन्दु यह है कि पतित मानव के तौर पर संसार के प्रति, वास्तविकता का और परमेश्वर का और वह जिस प्रकार इस संसार में काम करता है, हमारा संकीर्ण विचार है परमेश्वर के सभी तरीकों को समझने की हम कैसे उम्मीद कर सकते हैं जब प्राकृतिक जगत, जहाँ कहीं भी हम घूमें रहस्य हैं हम नहीं समझते हैं? आखिरकार यह केवल 171 साल पहले था कि डॉक्टरों ने सीखा कि शल्य चिकित्सा से पूर्व उनके हाथों को धोना अच्छा विचार हो सकता था। वह है जिस प्रकार हम अज्ञानता में लीन हैं। और कौन जानता है कि यदि समय चलता रहे, हम भविष्य में और कौन-सी चीजों को ढूँढ़ेंगे जो यह प्रकट करेगा कि हम आज अज्ञानता में कितने लीन हैं?

निश्चित रूप से हम हमेशा परमेश्वर के तरीकों को नहीं समझते, परन्तु यीशु हम पर प्रकट करने को आया कि परमेश्वर कैसा है (यूहन्ना 14:9) तब क्यों जीवन के सभी रहस्यों के बीच में और अनापेक्षित घटनाएँ जिन्हें विचारना हमारे लिये मसीह के चरित्र पर बहुत निर्णायक है, और उसने हमारे लिये परमेश्वर और उसके प्रेम के विषय क्या प्रकट किया है? यह जान कर कि परमेश्वर का चरित्र कैसा है यह हमें परीक्षाओं के बीच विश्वस्त बने रहने में कैसे मदद कर सकता है जो अन्याय और गलत लगे?

बुधवार **दिसम्बर 6**

अम्मी: "मेरे लोग"

रोमियों 9:25 में पौलुस होशे 2:23 को उद्धृत करता है, और रोमियों 9:26 में, वह होशे 1:10 को उद्धृत करता है। पृष्टभूमि यह है कि परमेश्वर ने होश को सलाह दी कि "एक वेश्या को पत्नी बना ले" (होश 1:2) यह परमेश्वर का इस्राएलियों के साथ संबंध का उदाहरण स्वरूप था, क्योंकि राष्ट्र विचित्र देवताओं के पीछे हो चला था। इस विवाह से जन्में बच्चे, नामकरण हुए जो जाहिर करता था: मूर्तिपूजक इस्राएल का दण्ड और परमेश्वर का इनकार। तीसरे बच्चे का नाम लोआम्मी रखा गया (होशे 1:9), जिसका शाब्दिक अर्थ "मेरे लोग नहीं।"

तथापि, इन सब के बीच, होशे ने भविष्यवाणी की कि समय आयेगा जब उसके लोगों को दण्डित करने के बाद, परमेश्वर उनके भाग्य को पुन: स्थापित करेगा, उनके झूठ देवताओं को ले लेगा, और उनके साथ एक वाचा बांधेगा। (देखें होशे 2:11-19) इस बिन्दु पर जो लोआम्मी थे, "मेरे लोग नहीं," आम्मी "मेरे लोग" हो जायेंगे।

पौलुस के दिनों में, आम्मी वे थे "अर्थात् हम पर जिन्हें उसने न केवल यहूदियों में से वरन अन्यजातियों में से भी बुलाया" (रोमि० 9:24) सुसमाचार की क्या ही स्पष्ट और सामर्थ्यपूर्ण प्रस्तुति है, सुसमाचार जो शुरू से ही पूरे संसार के लिये था। कोई आश्चर्य नहीं हम ऐडवेंटिस्ट के तौर पर प्रकाशितवाक्य 14:6 से हमारी बुलाहट के भागीदार होते हैं, "फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा जिसके पास पृथ्वी पर के रहने वालों की हरएक जाति, और कुल, और भाषा, और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था।" आज पौलुस के दिन की तरह, और प्राचीन इस्राएल के दिन की तरह, उद्धार का सुसंवाद पूरे संसार में फैलाना है।

पढ़ें : रोमियों 9:25-29। चीजों के विषय में अपने तर्क को पेश करने के लिये पुराने नियम को पौलुस कितना अधिक उद्धृत करता है जो उसके समय में हो रहे थे। इस अनुच्छेद में कौन-सा मूल संवाद पाया जाता है? कौन-सी आशा यहाँ पर उसके पाठकों को पेश की जा रही है?

वास्तविकता यह कि पौलुस के कुछ रिस्तेदारों ने सुसमाचार की अपील को ठुकरा दिया जो उसके हृदय में "भारी बोझ और निरंतर दुख" लाया (रोमि० 9:2) परन्तु कम से कम वहाँ पर अवशेष बचा हुआ था। परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ असफल नहीं होती जब कि मनुष्य ऐसा करते हैं। उम्मीद हमारी हो सकती है वह यह कि, अंत में परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ पूर्ण होंगी, और यदि हम उन प्रतिज्ञाओं को हमारे लिये दावा करते हैं तो वैसी ही वे हम में पूरी होंगी।

कितनी बार लोगों ने आपको हताश किया है? कितनी बार आपने स्वयं को और दूसरों को हताश किया है? संभवत: अनगिणत, सही है? इन असफलताओं से आप क्या पाठ सीख सकते हैं इस विषय में कि आपका अंतिम भरोसा कहाँ होना चाहिए?

बृहस्पतिवार **दिसम्बर 7**

बाधा

"सो हम क्या कहें? यह कि अन्यजातियों ने जो धार्मिकता की खोज नहीं करते थे, धार्मिकता प्राप्त की अर्थात् उस धार्मिकता को जो विश्वास से है। परन्तु इस्राएली जो धर्म की व्यवस्था की खोज करते हुए उस व्यवस्था तक नहीं पहुँचे। किस लिये? इसलिये कि वे विश्वास से नहीं" (रोमि० 9:30-32) यहाँ पर संवाद क्या है, और सबसे महत्त्वपूर्ण, इस संवाद को हम कैसे आत्मासात कर सकते हैं जो निश्चित समय और स्थान पर लिखी गई थी और हम स्वयं पर आज ये सिद्धांत लागू होते हैं? हमारे प्रसंग में वही

गलतियों को करने से हम कैसे बच सकते हैं जिन्हें कुछ इस्राएलियों ने किया?

उन शब्दों में जहाँ गलतफहमी नहीं हो सकती, पौलुस अपने रिस्तेदारों का वर्णन करता है कि वे क्यों कुछ चीजों को खो दे रहे हैं जिसे परमेश्वर उनके पास होना चाहता है - और उससे बढ़कर वे किसी वस्तु के पीछे थे परन्तु हासिल नहीं करत पाते थे।

मजेदार बात यह है कि अन्यजाति जिन्हें परमेश्वर ने ग्रहण कर लिया था ऐसी स्वीकृति के लिये प्रयासरत भी नहीं थे। वे अपनी रूचियों एवं उद्देश्यों का पीछा कर रहे थे जब उनके पास सुसंवाद आया। इसकी कीमत के लालच में, उन्होंने इसे ग्रहण किया। परमेश्वर ने उन्हें धर्मी घोषित किया क्योंकि उन्होंने यीशु मसीह को अपना एवजी (प्रतिनिधि) के तौर पर ग्रहण कर लिया था । यह विश्वास का सौदा था ।

इस्राएलियों के साथ समस्या यह थी कि वे ठेस लगने के पत्थर से ठोकर खाये (रोमि० 9:33)। कुछ सब नहीं (देखें प्रेरित० 2:41), नासरत के यीशु को जिसे परमेश्वर ने भेजा मसीहा के तौर ग्रहण करने, उसका इन्कार किया। मसीह ने उनकी उम्मीदों को पूरा नहीं किया, इसलिये वह जब आया उन्होंने उससे मुंह मोड़ लिया।

इस अध्याय की समाप्ति से पूर्व पौलुस पुराने नियम के दूसरे पद को उद्धृत करता है: "जैसा लिखा है, देखो मैं सिय्योन में एक ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान रखता हूँ, और जो उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा" (रोमि० 9:33), इस अनुच्छेद में, पौलुस पुन: दिखाता है कि उद्धार की योजना में सच्चा विश्वास कितना निर्णायक है (इसे भी देखें 1 पतरस 2:6-8) अपमान की चट्टान? और फिर भी, जो कोई उस पर विश्वास करे वह लज्जित न होगा? जी हाँ, बहुतों के लिये, यीशु ठेस का पत्थर है, पर उनके लिये जो उसे जानते और उसे प्यार करते, वह अलग तरह की चट्टान है, "मेरे वचन की चट्टान" (भजन० 89:26)।

क्या आपने यीशु को कभी "ठेस लगने की चट्टान" या अपमान की चट्टान की तरह पाया है? यदि ऐसा, तो क्यों ऐसा? यही है, जो आप कर रहे थे उसने उस परिस्थिति में ला दिया? आप कैसे निकले, और आपने क्या सीखा ताकि, एक विश्वासकर्त्ता है, आप यीशु के साथ पुन: उस प्रकार के विपरीत संबंध में स्वयं को कभी नहीं पाते हैं?

शुक्रवार **दिसम्बर 8**

अतिरिक्त विचार : एलेन जी० ह्वाईट की किताब, द ग्रेट कांट्रोवर्सी में "लेटर इंगलिश रिफॉर्मर" पेज 261, 262 को पढ़ें; द एस०डी०ए० इन साईक्लोपीडिया में "फेथ एन्ड वर्क्स" पेज 530, 531 पढ़ें; द एस०डी०ए० बाइबल कॉमेंट्री, वाल्यूम 1 में एलेन जी० ह्वाईट कॉमेंट्स, पेज 1099, 1100 पढ़ें।

"यहाँ पर व्यक्तिगत और लोगों का चुनाव है, एकमात्र चुनाव जो परमेश्वर के वचन में है, जहाँ मनुष्य बचाये जाने के लिये चुना जाता है। बहुत से लोगों ने अंत को देखा है, यह सोचते हुए कि वे निश्चित रूप से स्वर्गीय आनन्द के लिये चुने गये; परन्तु यह वह चुनाव नहीं है जो बाइबल प्रकट करती है। मनुष्य अपने उद्धार को कांपते हुए और भय के साथ हल करने के लिये चुना गया है। वह हथियार से सुसज्जित होने को चुना गया है, ताकि विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ सके। वह उन साधनों को प्रयुक्त करने के लिये चुना गया है जिससे परमेश्वर ने उसकी पहुंच के अंदर रखा है ताकि प्रत्येक अपवित्र इच्छा के विरुद्ध लड़ सके जब शैतान उसकी आत्मा के लिये जीवन का खेल खेल रहा है। वह प्रार्थना करने, पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ने और परीक्षा में न पड़ने के लिये चुना गया है। वह निरंतर विश्वास करने के लिये चुना गया है। वह परमेश्वर के मुख से निकलने वाले प्रत्येक वचन पर आज्ञाकारी होने के लिये चुना गया है, ताकि वह केवल सुनने वाला नहीं वरन वचन पर कार्य करने वाला बने। यह बाइबलीय चुनाव है।" - एलेन

जी० ह्वाईट, टेस्टीमोनीज टू मिनिस्टिर्स एण्ड गोस्पल वर्कर्स, पेज 453, 454।

"कोई सीमित दिमाग, असीमित (ईश्वर) के चरित्र और कार्यों को पूर्ण रूपेण समझ नहीं सकता। हम खोजने के द्वारा परमेश्वर को नहीं पा सकते। ताकतवर बुद्धिशाली एवं कुलीन, वैसे ही कमजोर एवं अज्ञानी को, परमेश्वर का ज्ञान नहीं मिलता। परन्तु फिर भी "बादल और अन्धकार उसके चारों ओर है, उसके सिंहासन का मूल धर्म और न्याय है। भजन 97:2। हम यहाँ तक हमारे साथ उसके व्यवहार को समझ सकते हैं असीम ताकत में एक साथ दया की असीमितता को पता लगाने के तौर पर। हम उसके उद्देश्यों को उतना ही समझ सकते हैं जितना हम समझने की योग्यता रखते हैं, इससे पार अभी भी हम उस हाथ पर भरोसा कर सकते हैं जो सर्वशक्तिमान है, हृदय जो प्रेम से भरा है"। - एलेन जी० ह्वाईट एजुकेशन, पेज 169 ।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- कई मसीही सिखाते हैं, कि हमारे जन्म से भी पहले, परमेश्वर ने कुछ को बचाये जाने के लिये और कुछ को खोने के लिये चुना है। यदि आप उनमें से एक हैं जिन्हें परमेश्वर, अपने असीम प्रेम और ज्ञान में हमें खो जाने के लिये पहले ही अभिषिक्त किया, तब कोई बात नहीं जो चुनाव आप करते हैं, आप नरक के भागी होने के लिये बर्बाद हो गये हैं - जैसे बहुत लोग विश्वास करते हैं नरक में अनंत-काल तक जलते रहना। दूसरे शब्दों में, हमारे चुनावों के द्वारा नहीं परन्तु केवल परमेश्वर की व्यवस्था के द्वारा कुछ लोग इस जीवन में यहाँ पर यीशु के साथ बचाये जाने के संबंध के बिना पहले से जीने को निश्चित हुए हैं केवल नरक के आग में हमेशा जलने के लिये। उस तस्वीर में गलत क्या है? वह दृश्य किस प्रकार इन मुद्दों के साथ हमारे संबंध को फर्क करता है?
- सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्ट कलीसिया और इसकी बुलाहट को आप कैसे देखते हैं - आज की दुनिया में प्राचीन इस्राएल की भूमि की तुलना करते हुए? कौन-सी समानताएं और असमानताएं हैं? किस तरीके से हम बेहतर कर रहे हैं? या क्या हम बदत्तर कर रहे हैं? अपने जवाब को सिद्ध करें।